भारतीय भाषाएँ और राजभाषा हिंदी : कालजयी कृतियाँ

सत्यमेव जयते

भारतीय भाषाएँ और राजभाषा हिंदी

कालजयी कृतियाँ

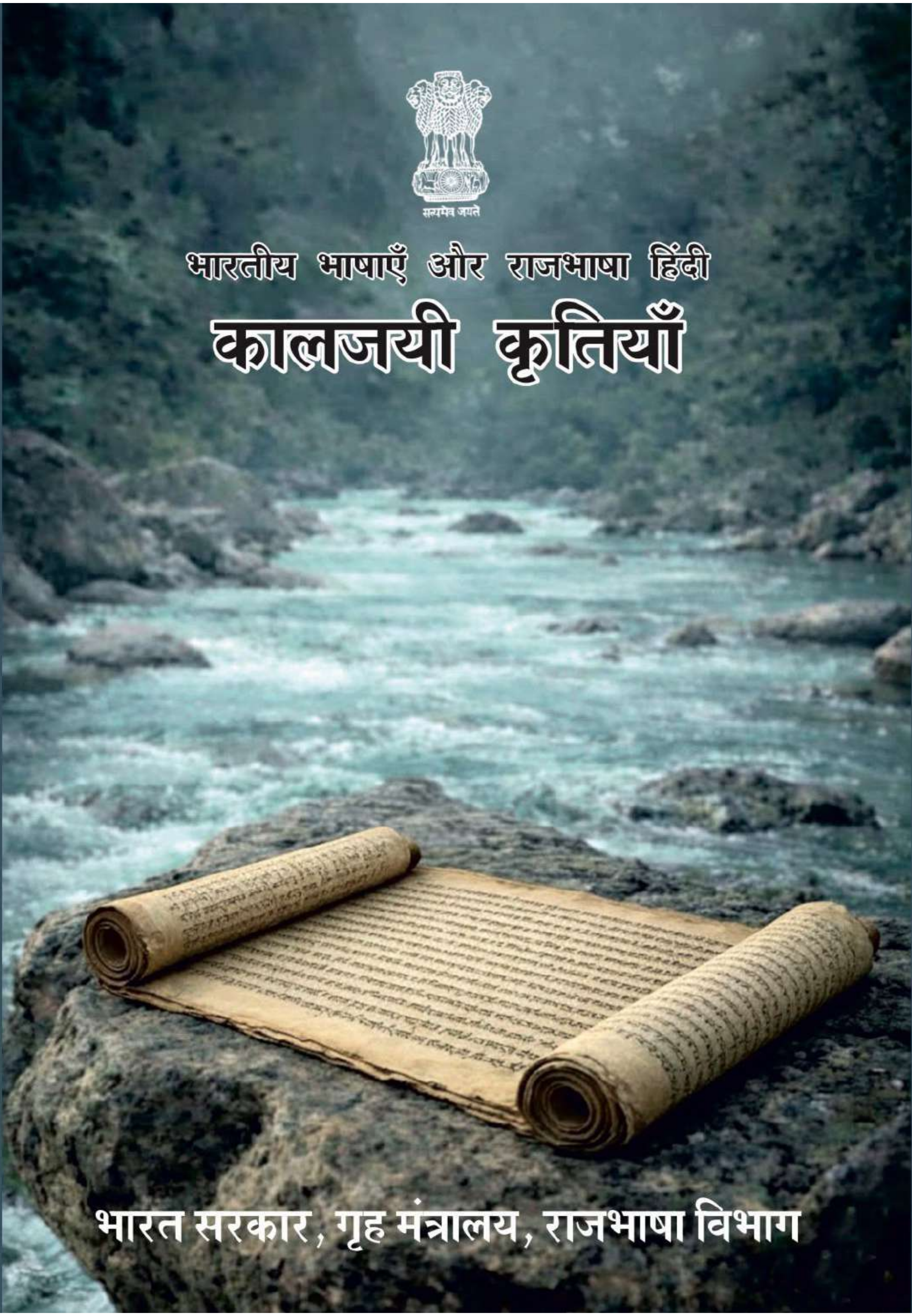

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

सत्यमेव जयते

भारतीय भाषाएँ और राजभाषा हिंदी

कालजयी कृतियाँ

संकल्पना

अंशुली आर्या

सचिव

मार्गदर्शन

निधि पाण्डेय

संयुक्त सचिव

सम्पादक

रघुवीर शर्मा

उप–निदेशक

भावना सक्सैना

सहायक निदेशक

परामर्श

विमलेश कान्ति वर्मा

लब्धप्रतिष्ठ भाषा वैज्ञानिक

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

भारतीय भाषाएँ और राजभाषा हिंदी: कालजयी कृतियाँ

Indian Languages & Rajbhasha Hindi: Timeless Classics

संकल्पना : अंशुली आर्या
Concept : Anshuli Arya

मार्गदर्शन : निधि पाण्डेय
Guidance : Nidhi Pandey

परामर्श : विमलेश कान्ति वर्मा
Consultation : Vimlesh Kanti Verma

सम्पादन : रघुवीर शर्मा, भावना सक्सैना
Edited by : Raghubir Sharma, Bhawna Saxena

सहयोग : समरेश कुमारी
Assistance : Samresh Kumari

प्रथम संस्करण : 2026

© सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

इस पुस्तक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आवरण : समय की बहती धारा में अपना स्थान बनाए कालजयी कृतियाँ

प्रकाशन : सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह

सत्यमेव जयते

गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सन्देश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा **'भारतीय भाषाएँ और राजभाषा हिंदी – कालजयी कृतियाँ'** नामक महत्वपूर्ण ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है। भारतीय भाषाएँ संवाद या अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ–साथ, भारत की सामासिक संस्कृति, बहुलतावादी चेतना और सामाजिक समरसता की जीवंत संवाहक हैं। विविध भाषाओं और साहित्यिक परंपराओं के माध्यम से विकसित यह भाषिक विरासत हमारी राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक एकात्मता और सभ्यतागत निरंतरता की सुदृढ़ आधारशिला है।

भारतीय ज्ञान –परंपरा में संवाद को ज्ञान–विनिमय एवं चिंतन–परंपरा के विस्तार का प्रभावी माध्यम माना गया है और साहित्य उसी परंपरा का सृजनात्मक एवं संवेदनात्मक स्वरूप है। साहित्य केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि मानवीय अनुभूतियों, नैतिक मूल्यों, सामाजिक चेतना और आध्यात्मिक दृष्टि की अभिव्यक्ति है। बहुभाषी भारत में विभिन्न भाषाओं के माध्यम से विकसित यह साहित्यिक संवाद सदैव सद्भाव, सह–अस्तित्व और सांस्कृतिक समन्वय को परिपक्व करता आया है। इस ग्रंथ की परिकल्पना राजभाषा विभाग के गहन वैचारिक मंथन का परिणाम है, जिसके द्वारा भाषाओं के संवैधानिक एवं प्रशासनिक आयामों के साथ–साथ उनके साहित्यिक, सांस्कृतिक और सभ्यतागत पक्षों को भी समेकित रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। भारतीय साहित्य की परंपरा मूलतः एक साझा सांस्कृतिक चेतना पर आधारित रही है, जहाँ रामायण तथा महाभारत जैसे महाकाव्यों ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में न केवल अनुवाद, बल्कि स्वतंत्र और कालजयी साहित्यिक सृजन को प्रेरित किया है। यह उल्लेखनीय है कि संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित सभी 22 भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि कालजयी कृतियों को एक समेकित एवं तुलनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करने का ऐसा सुव्यवस्थित प्रयास प्रथम बार किया जा रहा है। यह ग्रंथ भाषाई विविधता को प्रतिस्पर्धा के रूप में नहीं, बल्कि परस्पर पूरकता और सह–अस्तित्व के रूप में देखने की भारतीय दृष्टि को साकार करता है। यह 'एक भारत–श्रेष्ठ भारत' की भावना को साहित्यिक आधार प्रदान करता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत सरकार ने भाषायी सुलभता, तकनीक, तकनीक–आधारित अनुवाद प्रणाली, डिजिटल शब्द–संपदा तथा बहुभाषिक प्रशासनिक प्लेटफॉर्म के माध्यम से भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन को नई गति प्रदान की है। **'विकसित भारत @2047'** के लक्ष्य की प्राप्ति में भाषायी समावेशन, ज्ञान की सहज उपलब्धता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास को केंद्रीय तत्व के रूप में स्वीकार किया गया हैं। इसी व्यापक दृष्टिकोण के अंतर्गत भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना, 'भारती', बहुभाषी अनुवाद सारथी तथा व्यापक डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द– सिंधु' जैसे नवाचारों के माध्यम से राजभाषा विभाग न केवल अपने संवैधानिक दायित्वों का प्रभावी निर्वहन कर रहा है, बल्कि भारतीय भाषाओं के बीच सार्थक संवाद, सहयोग और समन्वय को भी सुदृढ़ आधार प्रदान कर रहा है।

मुझे विश्वास है कि यह ग्रंथ न केवल पाठकों को विभिन्न भाषाओं की प्रतिनिधि कृतियों से परिचित कराएगा, बल्कि राजभाषा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के मध्य संवाद, सहयोग एवं रचनात्मक समन्वय को भी सुदृढ़ करेगा। मैं इस महत्वपूर्ण परियोजना के सफल क्रियान्वयन हेतु राजभाषा विभाग की समर्पित टीम को साधुवाद देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह ग्रंथ शोधकर्ताओं, साहित्यकारों, विद्यार्थियों, नीति–निर्माताओं तथा सामान्य पाठकों के लिए समान रूप से प्रेरक एवं उपयोगी सिद्ध होगा और साथ ही भारतीय भाषाओं के मध्य समरसता, सांस्कृतिक आत्मबोध और राष्ट्रीय गौरव को नई दिशा प्रदान करेगा।

मंगलकामनाओं सहित,

आपका

(अमित शाह)

दिनांकः 09 फरवरी, 2026

कार्यालय : गृह मंत्रालय, कर्तव्य भवन–03 नई दिल्ली–110001
दूरभाषः 23092462, 23094686, फैक्सः 23094221
ई–मेलः hm@nic.in

नित्यानन्द राय
NITYANAND RAI

सत्यमेव जयते

गृह राज्य मंत्री
भारत सरकार
कर्तव्य भवन–3, नई दिल्ली – 110001
MINISTER OF STATE FOR
HOME AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA
KARTAVYA BHAVAN-3,
NEW DELHI - 110001

संदेश

मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि राजभाषा विभाग द्वारा *'भारतीय भाषाएँ और राजभाषा हिंदी – कालजयी कृतियाँ'* विषय पर इस महत्वपूर्ण ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पुस्तक भारत की भाषाई विरासत को समग्रता में प्रस्तुत करने का एक सार्थक और दूरदर्शी प्रयास है, जिसमें संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित सभी 22 भारतीय भाषाओं की अमूल्य साहित्यिक परंपराओं और कालजयी रचनाओं को एक सूत्र में पिरोया गया है।

भारतीय भाषाओं का साहित्य केवल कलात्मक अभिव्यक्ति भर नहीं है, बल्कि वह हमारे समाज के ऐतिहासिक अनुभवों, नैतिक मूल्यों, लोकचेतना और बौद्धिक परंपराओं का जीवंत दस्तावेज भी है। विभिन्न भाषाओं में सृजित साहित्यिक कृतियों ने देशकाल की सीमाओं से परे जाकर मानवता, सह-अस्तित्व और सामाजिक समरसता के मूल भावों को सुदृढ़ किया है। यह ग्रंथ इसी साझा सांस्कृतिक चेतना को उजागर करते हुए यह स्पष्ट करता है कि भाषाई विविधता के भीतर एक गहरी राष्ट्रीय एकता अंतर्निहित है।

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जब त्वरित सूचना और सतही ज्ञान का प्रभाव बढ़ रहा है, ऐसे समय में भारतीय भाषाओं के साहित्य का गंभीर अध्ययन और संरक्षण और भी प्रासंगिक हो जाता है। यह पुस्तक न केवल विद्यार्थियों, अध्येताओं और शोधार्थियों के लिए उपयोगी संदर्भ ग्रंथ सिद्ध होगी, बल्कि आम पाठकों को भी भारतीय भाषाओं की गहन साहित्यिक परंपरा से जुड़ने का अवसर प्रदान करेगी।

मुझे विश्वास है कि यह प्रकाशन भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान की भावना को सुदृढ़ करेगा, भाषाओं के बीच संवाद को प्रोत्साहित करेगा तथा राजभाषा हिंदी के माध्यम से राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक आत्मबोध को और अधिक सशक्त बनाएगा। यह ग्रंथ राजभाषा विभाग के उद्देश्यों को नई ऊर्जा और व्यापक दृष्टि प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा।

इस महत्वपूर्ण और प्रशंसनीय प्रयास के लिए मैं राजभाषा विभाग, संपादकीय मंडल तथा इससे जुड़े सभी विद्वानों, लेखकों और सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी भारतीय भाषाओं की गरिमा और साहित्यिक धरोहर को समर्पित ऐसे प्रकाशन निरंतर सामने आते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

(नित्यानन्द राय)

नई दिल्ली।
फरवरी, 2026

Office Tel. : 011-24010311, 24010312

बंडी संजय कुमार
BANDI SANJAY KUMAR

International Year of Cooperatives 2025

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

गृह राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR HOME AFFAIRS GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राजभाषा विभाग द्वारा **'भारतीय भाषाएँ और राजभाषा हिंदी–कालजयी कृतियाँ'** विषय पर यह महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। यह पुस्तक संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित सभी 22 भारतीय भाषाओं की उन साहित्यिक कृतियों और परंपराओं को सामने लाती है, जिन्होंने समय की कसौटी पर खरे उतरते हुए समाज को निरंतर दिशा और प्रेरणा दी है।

भारतीय भाषाओं का साहित्य हमारी संस्कृति, जीवन मूल्यों और सामाजिक चेतना का सशक्त माध्यम रहा है। विभिन्न भाषाओं में रची गई कालजयी रचनाएँ मानव अनुभूति, संवेदना और विचार की साझा अभिव्यक्ति हैं। यह पुस्तक पाठकों को भारतीय भाषाओं की विविधता के साथ–साथ उनके भीतर निहित एकता से भी परिचित कराएगी ऐसा मेरा विश्वास है।

आज के समय में, जब त्वरित सूचनाओं के बीच गहन अध्ययन और साहित्यिक समझ की आवश्यकता बढ़ गई है, ऐसे में यह ग्रंथ विशेष महत्व रखता है। यह न केवल विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी होगा, बल्कि सामान्य पाठकों को भी भारतीय भाषाओं की समृद्ध साहित्यिक परंपरा से जोड़ने का कार्य करेगा।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान, संवाद और पारस्परिक समझ को और अधिक सुदृढ़ करेगी तथा राजभाषा विभाग के उद्देश्यों को प्रभावी रूप से आगे बढ़ाएगी।

इस सराहनीय प्रयास के लिए मैं राजभाषा विभाग तथा इससे जुड़े सभी विद्वानों और सहयोगियों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी ऐसे उपयोगी प्रकाशन निरंतर होते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित ।

(बंडी संजय कुमार)

Office : Room No. 35044, Kartavya Bhawan-3, Janpath, New Delhi-110 001 Tel. : 24010331, 24010332

विषय क्रम

1.	भारतीय भाषाओं की कालजयी धरोहर	अंशुली आर्या	9
2.	पुस्तक की रचना–प्रक्रिया	निधि पाण्डेय	13
3.	कालजयी साहित्यिक परंपरा का वैचारिक आधार : हमारे आर्ष ग्रंथ	भावना सक्सैना	15
4.	असमिया	रीतामणि वैश्य, अनामिका राजबंशी	29
5.	ओड़िआ	प्रदोष कुमार स्वाईं चक्रधर प्रधान	56
6.	उर्दू	जानकीप्रसाद शर्मा	79
7.	कन्नड़	टी.आर. भट्ट	98
8.	कश्मीरी	एजाज मोहम्मद शेख	114
9.	कोंकणी	आदित्य दयानन्द सिनाय भांगी, नरेश चंद्रकांत नायक	138
10.	गुजराती	भाग्येश झा	151
11.	डोगरी	प्रीतम कटोच	166
12.	तमिल	पद्मप्रिया	176
13.	तेलुगु	जे.एल.रेड्डी	201
14.	नेपाली	ज्ञानबहादुर छेत्री	219
15.	पंजाबी	इन्दु गुप्ता	238
16.	बांग्ला	पंकज साहा	256
17.	बोडो	फुकन चंद्र बसुमतारी	280
18.	मणिपुरी	एस. लनचेनवा मीतै	292
19.	मराठी	प्रवीण श्रीराम देशमुख	298
20.	मैथिली	शुभंकर मिश्र	328
21.	मलयालम	एस. तंकमणि अम्मा	344
22.	संस्कृत : शास्त्रीय कृतियां	आशुतोष वशिष्ठ	366
23.	संस्कृत : साहित्यिक कृतियां	भागिरथि नंद	392
24.	संथाली	नाजीर हेम्बरम	409
25.	सिंधी	विम्मी रामचंद सदारंगाणी	427
26.	हिंदी	विमलेश कांति वर्मा	460
	लेखक परिचय		497

यद्वै वाङ् नाभविष्यन्न धर्मो नाधर्मो व्यज्ञापयिष्यत्।
न सत्यं नानृतं न साधु नासाधु न हृदयज्ञो नाहृदयज्ञो
वागेवैतत्सर्वं विज्ञापयति वाचमुपास्वेति।।

– छान्दोग्योपनिषत्–7–2–1

यदि वाणी का अस्तित्व न होता तो धर्म और अधर्म का, सत्य और असत्य का, अच्छे और बुरे का, प्रिय और अप्रिय का बोध नहीं हो पाता। वाणी से ही हमें इन सभी का ज्ञान होता है। अतः वाणी की उपासना करो।

– छान्दोग्योपनिषत्–7–2–1